।। ओ३म् ।।

www.aryawartkesari.com

आर्यावर्त केसरी

आर.एन.आई.सं.
UPHIN/2002/7589
डाक पंजी. सं.
UPMRD Dn-64/2024-26

दयानन्दाब्दः 201
मानव सृष्टि सं. : 1960853125
सृष्टि सं.: 1972949125

विश्व भर में प्राच्य वैदिक संस्कृति तथा भारतीयता का उद्घोषक पाक्षिक

ARYAWART KESARI
Amroha U.P.-244221 India

संरक्षक सहयोग : रू. 5100/- आजीवन : रू.1100/- वार्षिक शुल्क : रू.100/- (विदेश में) 5 वर्ष के लिए 35 डॉलर

वर्ष-23 अंक-16 मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्ण चर्तुदशी तक संवत 2081 विक्रमी 16 से 30 नवम्बर 2024 अमरोहा (उ.प्र.) मूल्य : प्रति -5/-

गुयाना में आर्यसमाज पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी

वैदिक संस्कृति को संरक्षित करने में आर्य समाज की भूमिका को सराहा

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

गुयाना। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दक्षिण अमेरिका के देश गुयाना पहुंचे, तो वे आर्य समाज के स्मारक पर भी गए, जिसका लोकार्पण सन 2011 में गुयाना में आर्य समाज आंदोलन की शताब्दी के अवसर पर किया गया था।

अगर गुयाना में आर्य समाज के आंदोलन का इतिहास देखें तो यह बेहद गर्व करने वाला है।

आर्य समाज पहली बार सन 1900 के दशक की शुरूआत में स्वामी दयानंद की शिक्षाओं के साथ गुयाना पहुंचा, लेकिन महर्षि दयानंद जी के परम शिष्य और क्रांतिकारी भाई परमानंद के आगमन के बाद 1910 के बाद तेजी से बढ़ा। वर्ष 1921 में, गुयाना में पहला आर्य समाज बना । वर्ष 1929 में महर्षि दयानंद जी के दूसरे शिष्य पंडित मेहता जैमिनी के गुयाना पहुँचने के बाद आर्य समाज का संगठन बना और 1935 में यहां पंडित भास्करानंद पहुंचे और दस साल तक गुयाना में रहे। उन्होंने यहां विभिन्न समाजों को संगठित किया। गुयाना के सभी आर्य समाजों के लिए एक मूल निकाय, अमेरिकन आर्यन लीग की स्थापना की गई। इसके बाद पंडित उषारबुद्ध आर्य 1955 में पहुंचे और आर्य समाज के युवा संगठन आर्य वीर दल की स्थापना की।

यहां पहुंच कर प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने अपनी एक पोस्ट में लिखा कि _ गुयाना के जॉर्जटाउन में, आर्य समाज स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। गुयाना में हमारी संस्कृति को संरक्षित करने में आर्य समाज की भूमिका वास्तव में सराहनीय है। यह एक बहुत ही खास वर्ष भी है, क्योंकि हम स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती मना रहे हैं।

-डॉ. वी. पी. कपूर

विश्वभर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या
100000
एक लाख

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक

निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
मोबा : 8630822099, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

सम्पादकीय

नारी शिक्षा - वेदाधिकार

महर्षि दयानंद ने छुआछूत के साथ ही साथ बाल , बहु, वृद्ध तथा अनमेल विवाह , सती प्रथा , समुद्री यात्रा निषेध आदि जैसी सामाजिक कुरीतियों का भी प्रबल विरोध किया है। इसी का परिणाम है कि लोगों में इस प्रकार की कुरीतियों के प्रति अश्रद्धा हो चली है। महर्षि दयानंद ने " स्त्रीशुद्रौ नाधियताम् " की काल्पनिक श्रुति के आधार पर स्त्रियों एवं शूद्रों पर आरोपित प्रतिबंधों को तर्क एवं शास्त्र विरुद्ध, मूर्खतापूर्ण और निराधार सिद्ध करते हुए उन्हें वेदाधिकार प्रदान किया ।

सामाजिक क्षेत्र में दयानंद का सबसे बड़ा योगदान नारी जाति को शिक्षा , सम्मान और पुरुषों के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार एवं स्वतंत्रता प्रदान करना है । नारी को ढोंगी साधु सन्यासियों के प्रपंच से बचने के लिए दयानंद प्राय यह कहा करते थे कि " माता ! मैं उन फकीरों में से नहीं हूं , जो पुत्र देते हैं " । यही नहीं, नारी के प्रति उनके हृदय में इतनी अगाध श्रद्धा थी कि एक बार निर्वस्त्र चार वर्षीय क्रीडा निमग्न कन्या को देखकर उनका सिर उस जन्मदायिनी मातृशक्ति के समक्ष श्रद्धावनत हो गया । नारी के प्रति इसी श्रद्धा भाव का परिणाम था कि उन्होंने प्राचीन भारत के इतिहास के उद्धरणों तथा अपने वेद भाष्य में कतिपय मंत्रों की व्याख्याओं द्वारा नारी शिक्षा का पक्ष प्रस्तुत किया तथा नारी को गुण , कर्म एवं स्वभाव अनुसार पुरुषों के बराबर प्रशासन , न्याय तथा युद्ध आदि का अधिकार प्रदान किया है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र शेष नहीं है, जिनमें दयानन्द ने स्त्री जाति को अधिकार न दिया हो। दयानन्द ने नारी शक्ति को पुनर्सम्मानित करके उसके प्रति " नरकस्य द्वारा " जैसी प्रतिगामी अवधारणा का खंडन किया तथा " यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ", की भारतीय संकल्पना की पुनः स्थापना की। यह दयानंद के सत्प्रयासों का ही सुफल है कि भारत की उपेक्षित नारी शक्ति देश की स्वतंत्रता और विकास में तभी से संलग्न है। दयानंद की शिक्षाओं से ही प्रेरणा प्राप्त कर स्वर्गीय दीवान बहादुर हरविलास शारदा ने तत्कालीन केंद्रीय सभा में जो विधेयक प्रस्तुत किया था वह आज भी " शारदा एक्ट " के नाम से सुप्रसिद्ध है । स्वामी दयानंद के समाज सुधार से संबंधित संपूर्ण कार्यों के आलोक में हमें अमेठी (जनपद सुल्तानपुर ,उत्तर प्रदेश) के स्वर्गीय महाराज , राजर्षि रणञ्जय सिंह के इस कथन में पूर्णतया सत्यता का आभास होता है कि , " मैं सशपथ कह सकता हूं कि यदि दयानंद न होते , तो इस समय हम शिखा सूत्र से विहीन दिखाई देते " । वास्तव में, दयानन्द समाज सुधार के क्षेत्र में अपने पूर्ववर्ती एवं परवर्ती समस्त सुधारकों से अधिक प्रगतिशील तथा युग धर्म के अनुकूल प्रतीत होते हैं।

सुख चाहे जो नर जीवन का

आर्यावर्त केसरी समाचार

सुख चाहे जो नर जीवन का
जप ले प्रभु-नाम प्रमाद न कर।
है वो ही सुमरने योग्य सखा
तू और किसी को याद ना कर।
सुख चाहे जो नर जीवन का..।।
अस्थिर हैं जग के ठाठ सभी,
यदि बिछुड़.गए अचरज ही क्या,
हो लोभ मोह के वशीभूत,
सिर धुन के शोक-विषाद न कर।
सुख चाहे जो नर जीवन का...।।
धन-माल अपार बटोर भले ,
पर इतना ध्यान अवश्य रहे,
अपना घर-बार बसाने को ,
औरों का घर बर्बाद न कर।
सुख चाहे जो नर जीवन का..।।
पर-निन्दा को तजकर 'प्रकाश',
आदर्श बना निज जीवन को,
सत्-ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से,
दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर।
सुख चाहे जो नर जीवन का..।।
है वो ही सुमरने योग्य सखा
तू और किसी को याद ना कर
सुख चाहे जो नर जीवन का..।।

पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न

सत्य के प्रचार और असत्य को छुड़ाने का एक सार्वभौमिक आन्दोलन है आर्यसमाज

आर्यसमाज विश्व का ऐसा एक अपूर्व संगठन है जो किसी मनुष्य व महापुरुष द्वारा प्रचारित मत का प्रचार नहीं करता अपितु सृष्टि में विद्यमान सत्य की खोज कर सत्य का स्वयं ग्रहण करता व उसके प्रचार द्वारा विश्व के सभी मनुष्यों से उसे अपनाने, ग्रहण व धारण करने का आग्रह करता है। ऋषि दयानन्द के जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने परिवार में प्रचलित अतार्किक मूर्तिपूजा का इस कारण से विरोध किया था कि मूर्ति में अपने ऊपर ऊछल-कूद करने वाले चूहों को भी हटाने व भगाने की शक्ति नहीं थी और न अब है। उन्होंने अपने पिता व पण्डितों से मूर्ति के ईश्वर होने व उसमें दैवीय शक्ति होने पर प्रश्न किये थे? तत्कालीन कोई विद्वान उनकी शंकाओं का समाधान नहीं कर सका था। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि ईश्वर के नाम पर बनाई जाने वाली मूर्तियों व उनकी पूजा किये जाने पर भी उन मूर्तियों में ईश्वर की दैवीय शक्ति का किंचित न्यून अंश भी विद्यमान नहीं है। उसके बाद ऋषि दयानन्द ने तथा उनके अनुगामी सभी बुद्धिमान विवेकयुक्त मनुष्यों ने भी इस बात का अनुभव किया। वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से चार ऋषियों को प्राप्त ज्ञान है। उनमें ईश्वर के सत्यस्वरूप का विस्तार से वर्णन है। ईश्वर की उपासना का भी वेदों में विस्तृत वर्णन है। वेदों के आधार पर ही ऋषि पतंजलि ने ईश्वर की उपासना की विधि व उसके विवेचन पर ह्यह्ययोगदर्शनह्व ग्रन्थ का प्रणयन किया था। इनमें से किसी भी ग्रन्थ में ईश्वर की मूर्ति बनाकर पूजा व उपासना करने का विधान नहीं है। विचार व परीक्षा करने पर भी मूर्तिपूजा द्वारा ईश्वर की पूजा व उपासना होनी सिद्ध नहीं होती और न ही इससे मनुष्य को कोई लाभ होता है। मूर्तिपूजा से हानियां अवश्य होती हैं जिनका दिग्दर्शन ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के ग्यारहवें समुल्लास में कराया है। अतः ईश्वर का सत्यस्वरूप जानने के बाद ईश्वर की उपासना का एक ही विधान विदित होता है और वह है ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव का चिन्तन, मनन, विचार व ध्यान करते हुए उसकी उसके सत्य गुण, कर्म व स्वभाव से स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना। ऐसा ही आदि काल से वर्तमान काल के सभी धार्मिक विद्वान, विचारक, चिन्तक, वेदानुयायी करते आ हैं और इस ध्यानोपासना मार्ग से ही ईश्वर को काई भी मनुष्य प्राप्त कर सकता है। ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग यही है कि उसके वेदवर्णित गुणों का चिन्तन, मनन, विचार व ध्यान किया जाये और अष्टांग योग का अभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त होकर उसके ध्यान के द्वारा उसका साक्षात्कार किया जाये।

ऋषि दयानन्द को अपने जीवन में ईश्वर का साक्षात्कार करने तथा वेदाध्ययन से जो यर्थाथ ज्ञान प्राप्त हुआ उसमें उन्होंने पाया कि संसार में ईश्वर ही सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, सृष्टिकर्ता, अनादि व नित्य स्वरूप वाला है।ं ईश्वर से इतर जीवात्मा सूक्ष्म, अल्प प्रमाण, एकदेशी, ससीम, अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तियों वाली जन्म व मरण धर्मा सत्ता है। जीवात्मा का कल्याण ईश्वर को जानकर वेद की ज्ञान-विज्ञान पर आधारित ध्यान विधि से स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से होता है। इस उपासना में मूर्तिपूजा का कोई स्थान व महत्व नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक होने से मूर्ति के भीतर व बाहर दोनों स्थानों पर होता है। वह हमारी आत्मा के भीतर व बाहर तथा शरीर के भीतर व बाहर सर्वत्र विद्यमान है। वह संसार के प्रत्येक पदार्थ व वस्तु में व्यापक व समाया हुआ है। अतः सभी पदार्थों व वस्तुओं में उसकी समान रुप से उपस्थिति व विद्यमानता को जानना, उसका अनुभव करना व उसके गुणों का चिन्तन करते हुए उससे एकाकार हो जाना ही उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना होती है। इस वेदादि सम्मत ईश्वरी की उपासना ही संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य व धर्म होता है। इन तथ्यों व रहस्यों का देश व विश्व में प्रचार करने के लिये ऋषि दयानन्द को आर्यसमाज नामी संगठन को स्थापित करना पड़ा था।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में देश के अधिकांश भागों का भ्रमण किया था। वह देश के अधिकांश धार्मिक स्थानों पर गये थे जहां कोई विद्वान, मनीषी, चिन्तक व विचारक हो सकता था। वह हिमालय प्रदेश के धर्म स्थलों सहित पर्वतों की कन्दराओं में भी गये और वहां उन्होंने तपस्वी योगी व ध्यान व समाधि का अभ्यास करने वाले सिद्ध पुरुषों व विद्वानों की खोज की थी। उन्होंने सभी मनीषी व विद्वानों से वार्तालाप कर उनसे ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने अपने समय में देश में उपलब्ध समस्त धार्मिक साहित्य का भी अध्ययन किया था। वह संस्कृत के विद्वान थे, अतः प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन करने में उन्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती थी। अपनी अध्ययनशीलता, कठोर तप एवं साधनाओं के कारण ही वह समाधि अवस्था को प्राप्त कर ईश्वर का साक्षात्कार लेने के बाद भी सन्तुष्ट नहीं हुए थे। उनकी विद्या की भूख अतृप्त बनी हुई थी। ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर भी पूर्ण विद्या की उपलब्धि न होने के वह कारण सन्तुष्ट नहीं थे। अपने गुरु स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से उन्हें मथुरा के दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी के आर्षप्रज्ञावान् वा वेदज्ञानी होने का ज्ञान हुआ था। उनकी प्रेरणा से ही सन् 1860 में वह स्वामी विरजानन्द जी को प्राप्त हुए और तीन वर्ष तक उनके सान्निध्य में रहकर वेद व वेदांगों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के परिणाम से वह वेदविद् विद्वान बने और वेदों के मर्मज्ञ बनकर ऋषित्व को प्राप्त हुए थे।

गुरु विरजानन्द जी की प्रेरणा व परस्पर चर्चा से ऋषि दयानन्द को यह विदित हुआ था कि संसार में दुःखों का कारण अविद्या ही है। उन दिनों जितने मत प्रचलित थे वह सब अविद्या से ग्रस्त थे। ज्ञान व विद्या एक ही व सर्वत्र एक समान हुआ करता है। वह परस्पर भिन्न व परस्पर विपरीत कदापि नहीं होता। यदि सभी मतों में अविद्या न होती तो वह एक समान विचार, समान नियमों, मान्यताओं व सिद्धान्तों को मानने वाले होते। उनके नियम व परम्परायें पृथक-पृथक कदापि न होती। अविद्या के कारण ही मत-मतान्तरों में भेद व अन्तर विद्यमान है। इस अविद्या रूपी अज्ञान को विद्या वा वेद के प्रचार से ही दूर किया जा सकता था। गुरु की इस प्रेरणा से ही उन्होंने अविद्या के विरुद्ध आन्दोलन किया और देश के भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाकर वहां के लोगों को असत्य व अविद्या को छोड़ने तथा सत्य और विद्या का ग्रहण करने का प्रचार वा आन्दोलन किया था। ऋषि दयानन्द ने अपने प्रचार में अविद्या व असत्य पर आधारित सभी असत्य मान्यताओं पर आधारित अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों का खण्डन भी किया था। उन्होंने अविद्या पर आधारित सभी सामाजिक कुरीतियों व परम्पराओं का खण्डन कर विद्या पर आधारित सुरीतियों व परम्पराओं को ग्रहण व धारण करने का आन्दोलन व प्रचार किया। उनके अनुयायियों ने भी उनके बाद इसी कार्य को जारी रखा है जिसका प्रभाव देश व विश्व में पड़ा है।

ऋषि दयानन्द के प्रचार रूपी आन्दोलन के परिणामस्वरूप मत-मतान्तरों ने अपनी मान्यताओं पर विचार किया और उनकी व्याख्यायें बुद्धि पूर्वक करने के उनके प्रयत्न देखे गये हैं। देश से अविद्या को दूर करने के लिये भी ऋषि दयानन्द के विचारों के अनुकूल उनके अनुयायियों ने गुरुकुल व दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल व कालेज खोले जिससे देश से अविद्या रूपी अन्धकार दूर करने में सफलता मिली है। देश को आजादी की प्रेरणा भी ऋषि दयानन्द ने ही की थी। ऐसा माना जाता है कि देश की आजादी के आन्दोलन में 80 प्रतिशत लोग ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के देश भक्ति व स्वतन्त्रता के विचारों से प्रेरित व प्रभावित थे। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल तथा वीर भगत सिंह आदि अगणित लोग ऋषि दयानन्द से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े व प्रभावित थे।

समाज कल्याण व उत्थान का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने आन्दोलन कर उसका सुधार न किया हो। अतः आर्यसमाज विश्व में सत्य का प्रचारक एक अपूर्व संगठन है। आर्यसमाज की सभी मान्यतायें व सिद्धान्त सर्वांश में सत्य ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित हैं। अन्धविश्वासों व अविद्या का उनमें किंचित भी अंश नहीं है। मनुष्यों व विश्व के व्यापक हित में आर्यसमाज सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों को सभी मनुष्यों के जीवन में स्थापित करना चाहता है। इस कारण यह प्रचलित मत-मतान्तरों से सर्वथा भिन्न सत्य विद्याओं का प्रचार करने वाला वेद-प्रचार का आन्दोलन है। इसी से मनुष्यों का कल्याण होकर न केवल हमारे देश का अपितु विश्व का भी कल्याण होगा। सर्वत्र शान्ति स्थापित होगी। घृणा, द्वेष व हिंसा समाप्त होकर प्रेम तथा अहिंसा का वातावरण बनेगा। सबके सुख व उन्नति के लिये ही ऋषि दयानन्द ने अपना जीवन वेद प्रचार आन्दोलन के लिये समर्पित किया था। भविष्य में विश्व को वेद रूपी वट वृक्ष की छांव में आकर बैठने से शान्ति प्राप्त होगी। मनुष्य जीवन, समाज तथा देश-देशान्तर में शान्ति स्थापना का प्रमुख आधार व उपाय वेदों का अध्ययन व उसकी शिक्षाओं का प्रचार सहित उनका धारण व पोषण करना ही सिद्ध होता है। आईये! वेदों के अध्ययन का व्रत लें और दूसरों को भी वेद को अपनाने की प्रेरणा करें। वेदाध्ययन से हम ईश्वर सहित सुख व शान्ति को जी प्राप्त होंगे और हमारा मनुष्य जीवन अपने इष्ट लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त होगा। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा से प्राप्त वेदज्ञान की रक्षा करना व उसकी शिक्षाओं के अनुरूप आचरण करना संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म है।

-मनमोहन कुमार आर्य,
देहरादून

पुस्तक समीक्षा

(डॉ अनिल कुमार कटियार)

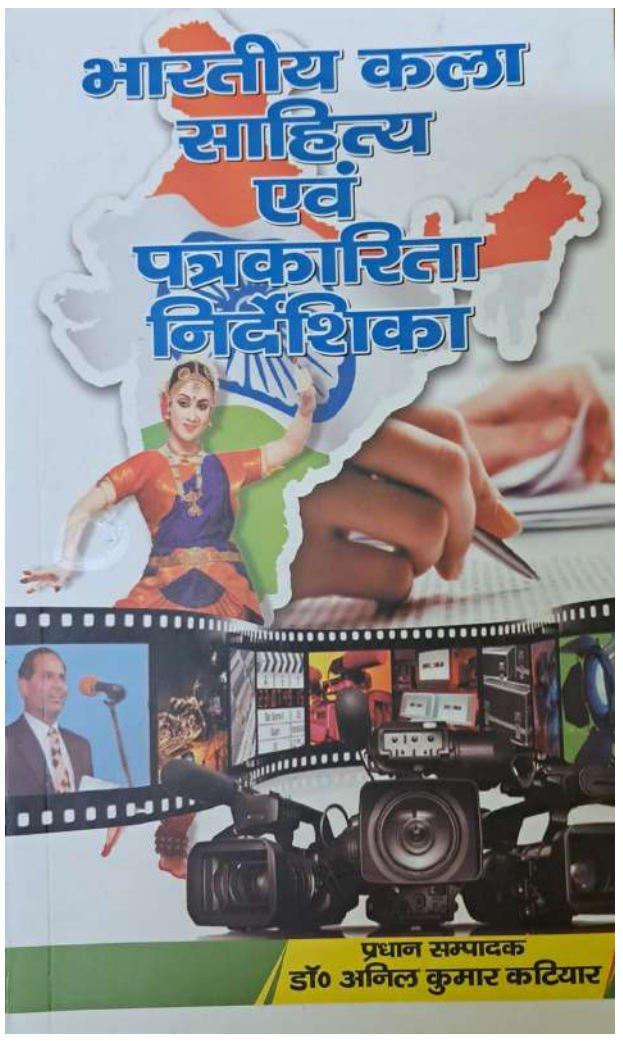

उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार एवं होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ अनिल कटियार द्वारा संकलित एवं सम्पादित भारतीय कला साहित्य एवं पत्रकारिता निर्देशिका वास्तव में अनमोल एवं सराहनीय कृति है। पुस्तक में सम्पूर्ण भारत के सभी प्रदेशों के कवियों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, कलाकारों आदि की राज्यवार सूचियों के साथ रंगीन सचित्र परिचय भी प्रकाशित किए गए हैं। पत्रकारों के विवरण के साथ ही देश के मीडिया से सम्पर्क बनाने के लिए सभी प्रदेशों से प्रकाशित होने वाले हिन्दी दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक समाचार पत्रों की सूचियों के साथ ही साहित्यिक मासिक, तिमाही आदि पत्रिकाओं और कला, संगीत, संस्कृति तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत संस्थाओं का विवरण दिया गया है। कलमकार अपनी पुस्तकें कहां से प्रकाशित कराएँ उसके लिए प्रकाशकों और प्रिंटिंग प्रेसों की सूची भी इसमें शामिल है। इस पुस्तक में शामिल सभी जानकारियों को एकजुट करने के लिए डॉ अनिल कटियार ने काफी मेहनत की है। इस पुस्तक के जरिए सभी प्रदेशों के साहित्य से जुड़े हुए लोगों को एक दूसरे से परिचय बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह सभी कलमकार लेखकों, साहित्यकारों, कवियों, पत्रकारों आदि के लिए बेहद सूचनाप्रद,उपयोगी और संग्रह करने योग्य पुस्तक सिद्ध होगी। पुस्तक का मूल्य 680/? इसके प्रकाशक रिक्तियां रोजगार समाचार प्रकाशन- 1058 ए, डब्ल्यू - वन, ब्लॉक ,साकेत नगर, कानपुर - 208014,मो 98391 67939 को इसकी धनराशि भेज कर पुस्तक की प्रति प्राप्त की जा सकती है। इस पुस्तक के लिए डॉ अनिल कुमार कटियार बधाई के पात्र हैं।

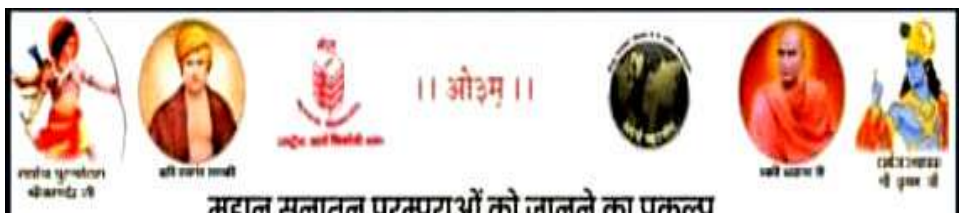

समीक्षक- डॉ राजेश त्रिवेदी
वरिष्ठ पत्रकार

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा
(आर्ष वैदिक साहित्य एवं राष्ट्र चेतना संबंध साहित्य के प्रकाशक)

प्रकाशित पुस्तकों की सूची:

अर्चना यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 20
आर्य पर्व पद्धति ..... मूल्य रू. 25
यज्ञ पद्धति ..... मूल्य रू. 35
आर्य समाज बुला रहा है ..... मूल्य रू. 6
कर्मफल रहस्य ..... मूल्य रू. 10
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की विचारधारा ..... मूल्य रू. 5
सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़े ..... मूल्य रू. 2
महर्षि दयानंद के जीवन के विविध प्रसंग मूल्य रू. 20
नीति शतक भाग-1, भाग-2----------(प्रत्येक का मूल्य रू. 20)
वैदिक सिद्धांत विमर्श ..... मूल्य रू. 25
भजन माला ..... मूल्य रू. 20
आर्योद्देश्यरत्नमाला ..... मूल्य रू. 8
महर्षि दयानंद की विशेषताएं ..... मूल्य रू. 8
आर्य समाज की मान्यताएं ..... मूल्य रू. 8
अंत्येष्टि संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 8
आर्य कन्या की सूझबूझ ..... मूल्य रू. 8
दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह ..... मूल्य रू. 60
संस्कार विधि ..... मूल्य रू. 80
दयानंद सुविचार धन ..... मूल्य रू. 70
कथा सरोवर ..... मूल्य रू. 50
मानव कल्याण निधि ..... मूल्य रू. 100
सत्यार्थ प्रकाश बिना जिल्द (छोटा) मूल्य रू. 80
सत्यार्थ प्रकाश सजिल्द (बड़ा) .. मूल्य रू. 250
प्रखर राष्ट्रचेता महर्षि दयानंद ....प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विरजानंद
प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी श्रद्धानंद ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी दर्शनानंद
प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा हंसराज ...प्रखर राष्ट्रचेता महात्मा लेखराम
प्रखर राष्ट्रचेता गुरुदत्त विद्यार्थी ...प्रखर राष्ट्रचेता लाला लाजपत राय
प्रखर राष्ट्रचेता पं. रामप्रसाद बिस्मिल .प्रखर राष्ट्रचेता सरदार भगत सिंह
प्रखर राष्ट्रचेता डॉक्टर हेडगेवार ...प्रखर राष्ट्रचेता स्वामी विवेकानंद
प्रखर राष्ट्रचेता सरदार पटेल ....प्रखर राष्ट्रचेता प्रकाशवीर शास्त्री
प्रखर राष्ट्रचेता डॉ. भीमराव अंबेडकर
प्रखर राष्ट्रचेता पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी प्रखर राष्ट्रचेता पं. दीनदयाल उपाध्याय
(ऐसे ही अन्य अनेक महापुरुषों के संक्षिप्त जीवन चरित्र/ प्रत्येक का मूल्य रू.10/)
अग्निहोत्र लैमिनेटेड फोल्डर मूल्य रू.10 ब्रह्म यज्ञ (संध्या) लैमिनेटेड फोल्डर रू. 6
महिला क्रांति गीत ..... मूल्य रू. 80
रंग बदलती दुनिया ..... मूल्य रू. 50
योग यौवन और प्रकृति पर्यावरण .. रू. 100
चतुर्वेद भाष्य .....संस्कार विधि
मनु स्मृति .....गौ करुणानिधि
यज्ञ और पर्यावरण .....बंदा बैरागी
दयानंद सप्तक
हिंदी के प्रचार प्रसार में आर्य समाज की भूमिका
रामायण का वास्तविक स्वरूप
यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद
(कवि वीरेंद्र राजपूत कृत काव्यार्थ)
लाला लाजपत राय समग्र
स्वामी श्रद्धानंद समग्र
जन जागरण भाग 2 ..... मूल्य रू. 70

आदि सहित आर्यावर्त प्रकाशन एवं देश के प्रमुख प्रकाशनों के साहित्य बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। समस्त साहित्य पर विशेष छूट उपलब्ध है कृपया आज ही साहित्य खरीदें और पाएं विशेष छूट।

संपर्क सूत्र : 94121 39333, 87552 68578

वेदाध्ययन और ईश्वर की उपासना से क्या प्राप्त होता है?

आर्यावर्त केसरी समाचार

मनुष्य के जीवन वेदाध्ययन का क्या महत्व है? उसे वेदाध्ययन क्यों करना चाहिये? मनुष्य जीवन में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर सबको विचार करके सार्थक व लाभप्रद निष्कर्ष निकाल कर उसे अपने जीवन में धारण कर लाभ उठाना चाहिये। वेदों का महत्व अन्य सभी सांसारिक ग्रन्थों से सर्वाधिक है। इसका कारण यह है कि वेद सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में ईश्वर द्वारा उत्पन्न चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को प्राप्त हुए थे। यह ज्ञान इन चार ऋषियों ने ब्रह्मा जी नाम के ऋषि को दिया था। यहीं से इन ऋषियों द्वारा अन्य मनुष्यों को भाषा सहित ज्ञान देने की परम्परा आरम्भ हुई। आज भी हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ से वेद अपनी उत्पत्ति के लगभग 1.96 अरब वर्ष बाद भी सर्वथा शुद्ध स्थिति में हमें प्राप्त हैं। वेद का दूसरा प्रमुख महत्व यह है कि वेदों से हमें ज्ञात होता है कि ईश्वर ही इस सृष्टि का रचयिता, धारक, पालक तथा संहारक है। ईश्वर को सृष्टि रचना व मनुष्यों को बनाने का सत्य उद्देश्य व रहस्य विदित है। उसी से चार वेद प्राप्त हुए हैं। अतः सभी विषयों का वेदों से अधिक सत्य व पुष्ट ज्ञान अन्य किसी सत्ता व उसके बनाये ग्रन्थ से नहीं हो सकता। हमारे ऋषियों ने वेदाध्ययन कर व इसके माध्यम से ईश्वर का साक्षात्कार कर इस रहस्य को जाना था। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना ही संसार के सभी मनुष्यों का परम धर्म है। वेदों में संसार की सबसे उत्तम व श्रेष्ठ भाषा वैदिक संस्कृत उपलब्ध होती है। वेदों को नष्ट करने के अपने व परायों ने अनेक प्रयत्न व षडयन्त्र किये। सत्य अविनाशी होता है, इस सिद्धान्त के अनुसार वेद आज भी हमें सुरक्षित प्राप्त हैं व कालान्तर में भी वेद सुरक्षित रहेंगे, ऐसी आशा हम करते हैं। वर्तमान समय में हमें वेदों की जो उपलब्धि हो रही है, उसका मुख्य श्रेय वेदर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पुरुषार्थ को ही है। यदि वह जन्म न लेते तो आज हमें वेद सुरक्षित रूप में वेदमन्त्रों के संस्कृत व हिन्दी अर्थों सहित प्राप्त न होते। अतः ऋषि दयानन्द का उपकार मानना तथा वेदों के संरक्षण हेतु वेदों का प्रचार व प्रसार करना सभी ईश्वर

को मानने वाले आस्तिक बन्धुओं का परम कर्तव्य है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों में हमें न केवल ईश्वर व आत्मा का सत्य व यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है अपितु संसार विषयक ज्ञान भी प्राप्त होता है। मनुष्य के कर्तव्यों वा धर्म का ज्ञान भी वेदों से ही प्राप्त होता है। संसार में मनुष्यों के सर्वांगीण धर्म का यदि कोई अविद्या से सर्वथा मुक्त ग्रन्थ है, तो वह केवल वेद ही है। वेदों से ही शब्द लेकर हमारे सृष्टि के आदिकालीन पूर्वजों ने स्थानों, पर्वतों एवं नदियों सहित सभी पदार्थों के नाम रखे थे। वेदों से ही हमें ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव सहित आत्मा के गुण, कर्म व स्वभाव तथा जीवात्मा के जन्म का उद्देश्य व मनुष्य जीवन के लक्ष्य का भी बोध होता है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य पूर्व जन्म-जन्मान्तरों में किये हुए कर्मों का भोग करना तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित देश, समाज तथा संसार के उपकार के लिये किये गये कर्मों को करके जन्म-मरण से छूट कर मोक्ष को प्राप्त होना होता है।

मनुष्य को अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिये सात्विक साधनों का ज्ञान भी वेद व वेद के ऋषियों द्वारा बनाये गये साहित्य वा शास्त्रों से ही होता है। वेदों को पढ़कर तथा उसके वास्तविक अर्थों व अभिप्राय को समझ कर ही हम वेदों के महत्व को जान सकते हैं तथा उससे लाभ उठा सकते हैं। मनुष्य जहां अनेकानेक सांसारिक कार्यों को करता है, वहीं उसे जीवन का कुछ समय नियमित रूप से वेदों के स्वाध्याय व अध्ययन के लिये भी देना चाहिये। वेदाध्ययन से लाभ ही लाभ है। मनुष्य यदि अधिक न भी करे तो केवल सन्ध्या के मन्त्रों सहित ईश्वर, प्रार्थना, उपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण तथा अग्निहोत्र के मन्त्रों के अर्थों सहित उपनिषद एवं दर्शनों का अध्ययन करके ही अपने जीवन को उन्नत व महान बना सकता है। स्वाध्याय के लिये ऋषि दयानन्द का ह्यह्यसत्यार्थप्रकाशह्व भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका अध्ययन करने से वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों वा समस्त वैदिक साहित्य व शास्त्रों के मूल भूत सिद्धान्तों व आशय का ज्ञान हो जाता है। ऐसा करके हम वेदों सहित ईश्वर की उपासना का महत्व जान जाते हैं जिससे हमें स्वस्थ जीवन, दीर्घायु, आरोग्यता, शारीरिक सुख व मानसिक शान्ति तथा परमगति मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्ति परम आनन्द की प्राप्ति का एकमात्र उपाय है। हमारे सभी ऋषि, मुनि, योगी तथा महापुरुष राम, कृष्ण तथा दयानन्द ने वेदाध्ययन एवं वेदाचरण का आचरण कर ही परमगति को प्राप्त किया था। इस जीवन में एक स्वर्णिम अवसर परमात्मा ने हमें भी दिया है। इस अवसर से हम सभी को लाभ उठाना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक ग्रन्थ लिखकर व सभी शंकाओं का समाधान कर हमें मोक्ष प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होने का सन्देश दिया है और इसकी प्राप्ति के साधन, उपायों तथा मनुष्य के आचरण पर भी प्रकाश डाला है जिसे हमें जानना व अपनाना है।

वेदाध्ययन करने से मनुष्य का जन्म लेना सार्थक होता है। मनुष्य का जन्म खाने, पीने व सुख भोगने मात्र के लिये प्राप्त नहीं हुआ है। मनुष्य जन्म हम सबको अपनी आत्मा और इस संसार के रचयिता, पालक व प्रलयकर्ता ईश्वर को जानने व उसकी उपासना कर दुःखों से सर्वथा मुक्त होने के लिये भी मिला है। सन्ध्या में हमें प्रतिदिन यह विचार करना चाहिये कि हम अपने जीवन में अपने कर्तव्यों व उद्देश्यों को पूरा कर रहे हैं अथवा नहीं? अकरणीय कार्यों का त्याग व करणीय को अपनाना ही सुधी मनुष्य का कर्तव्य है। ऐसा करके हम निश्चय ही वेदाध्ययन से प्राप्त होने वाले सद्गुणों को अपनी आत्मा में धारण कर सुखी व आनन्दित होंगे और परजन्म में हमें श्रेष्ठ मनुष्य योनि में उत्तम परिवेश में जन्म प्राप्त होने सहित आत्मा की मुक्ति की संभावनायें बनती है। यही सभी मनुष्यात्माओं के लिये प्राप्तव्य व करणीय है। इसी ओर परमात्मा तथा हमारे विद्वान वैज्ञानिक ऋषियों ने हमारा मार्गदर्शन व ध्यान दिलाया है। हमने परमात्मा व अपने पूर्वज ज्ञानी ऋषियों की आज्ञाओं की उपेक्षा नहीं करनी है अपितु उनसे लाभ उठाना है। ऐसा करके हम अपना, समाज, देश, संसार व समस्त मनुष्यजाति का उपकार व कल्याण कर पायेंगे।

अपने-अपने समय में मयार्दापुरुषोंत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण तथा वेदर्षि दयानन्द जी ने भी यही कार्य किया। ऋषि दयानन्द ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। ऋषि दयानन्द के समय में वैदिक धर्म व संस्कृति को जो चुनौतियां थीं, वह पूर्ववर्ती महापुरुषों के समय में नहीं थी। ऋषि दयानन्द ने ही सनातन वैदिक धर्म तथा संस्कृति को विधर्मी शक्तियों से बचाया है। उनके समय में वेद लुप्त हो रहे थे। उनका उन्होंने उद्धार व प्रचार किया। उन्होंने सभी शास्त्रों के तत्वज्ञान को अपनी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश में साधारण हिन्दी पठित मनुष्यों के लिए सृष्टि के इतिहास में प्रथम बार प्रस्तुत किया। सत्यार्थप्रकाश न भूतो न भविष्यति ग्रन्थ है। विधर्मियों से शास्त्रार्थ कर ऋषि दयानन्द ने उनके मतों की अविद्या का प्रकाश किया। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्मियों के धर्मान्तरण वा मतान्तरण का निवारण किया, देश को आजादी दिलाने की प्रेरणा की तथा देश से अविद्या का नाश तथा विद्या का प्रकाश करने के लिये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की। उनके अनुयायियों ने वेदों व वैदिक धर्म की रक्षा के लिए गुरुकुल खोले तथा आधुनिक शिक्षा के अध्ययन व अध्यापन के लिए डीएवी स्कूल व कालेजों का देश भर में प्रसार कर देश से अविद्या को दूर किया। समाज सुधार सहित अन्धविश्वासों को दूर करने में भी आर्यसमाज की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऋषि दयानन्द ने ही सामाजिक असमानता दूर करने के लिये लोगों को प्रेरित किया। उन्होंने जन्मना जातिवाद को वेदविरुद्ध बताया। उनके अनुसार वैदिक धर्म के अनुसार संसार के सभी मनुष्यों की एक ही जाति होती है। मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान होता है। उन्होंने स्त्री व शूद्रों सहित मनुष्य मात्र को वेदाध्ययन, वेद प्रचार, पण्डित बनने, यज्ञ का ब्रह्मा बनने तथा अपने गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार अपने अभीष्ट सात्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये प्रेरणा की। सारा संसार उनके देश व समाज हित में किये गये कार्यों के लिये उनका ऋणी एवं कृतज्ञ है।

वेदाध्ययन और ईश्वर की उपासना से मनुष्य को ईश्वर व आत्मा सहित संसार का यथावत ज्ञान होता है तथा उपासना से आत्मा की उन्नति होकर ईश्वर की प्राप्ति व ईश्वर का साक्षात्कार होता है। उपासक मनुष्य के सभी अभीष्ट सिद्ध होते हैं। सबसे बड़ा लाभ उसे जन्म व मरण के दुःखों से मुक्ति मिल जाती है। वह मोक्ष को प्राप्त होकर ईश्वर के सान्निध्य में रहता हुआ सुख व आनन्द का उपभोग करता है और 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों से अधिक समय तक जन्म-मरण व दुःखों से सर्वथा मुक्त रहता है। यह कोई छोटी बात नहीं है। अपने जीवन के कल्याण के लिये हमें वेदों की ओर लौटना ही होगा। जीवन कल्याण का संसार में अन्य कोई उपाय नहीं है। ओ३म् शम्।

-मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानंद की जयंती पर होंगे भव्य कार्यक्रम

(आर्यावर्त केसरी ब्यूरो)

प्रयाग। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रयाग के तत्वावधान में महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती के उपलक्ष्य में आर्यसमाज चौक में यज्ञ का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर मुख्य यजमान श्री पंकज जायसवाल, मंत्री_आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश रहे। इसके पश्चात एक बैठक आहूत हुई जिसमें आने वाले कुम्भ मेला प्रयागराज में अंतरराष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के आयोजन के विषय मे विचार विमर्श हुआ तथा आर्य गुरुकुल सिरसागंज फिरोजाबाद में महर्षि दयानन्द की जयंती पर होने वाले विशाल स्मरणोत्सव आर्य महाकुंभ के वृहद कार्यक्रम, जो कि दिनांक 16 17 तथा 18 नवंबर 2024 को आयोजित होगा, उस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने के विषय पर विस्तृत रूप से चर्चा हुई।

कार्यक्रम में जिले के विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री रवि पांडे मंत्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग ने किया।

सुविचार

आर्यावर्त केसरी समाचार

प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। स्वतंत्र शब्द का अर्थ होता है कि "वह अपनी इच्छा बुद्धि विचार संस्कार परिस्थिति आदि के आधार पर कर्म करता है।" "और जो जैसे कर्म करता है, उसे ईश्वर की न्याय व्यवस्था से वैसा ही फल मिलता है।" "ईश्वर न्यायकारी है। वह सबके कर्मों को देखता है। सदा सबका हिसाब रखता है। ठीक समय आने पर सबको कर्मों का ठीक ठीक फल देता है, न कम, और न अधिक।"

ईश्वर ने कुछ मनुष्यों को भी कर्म का फल देने का अधिकार दे रखा है। "जैसे घर में माता-पिता। स्कूल कॉलेज गुरुकुल आदि में अध्यापक आचार्य लोग। गांव में पंचायत। नगर में न्यायालय। और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में जो उन उन कंपनियों के बड़े अधिकारी होते हैं, उन सबको।इसी प्रकार से जो जो भी संस्थाएं काम करती हैं, वहां वहां के बड़े-बड़े अधिकारी अपने अधीनस्थ लोगों या कर्मचारियों को उनके कर्मों के अनुसार फल देते हैं।" यह सब कर्म फल व्यवस्था मनुष्यों के लिए वेदों में ईश्वर ने बताई है। "यदि किसी कर्म का फल यहां ये अधिकारी लोग नहीं दे पाते, तो ऐसे कर्मों का फल ईश्वर देता है। इस जन्म में या अगले जन्म में, जब भी जिस कर्म का फल देना उचित होता है, तब ईश्वर उनके कर्मों का फल ठीक-ठीक न्याय पूर्वक देता है।"

आजकल बहुत से लोग अपना भविष्य जानने को उत्सुक रहते हैं। और वे कितने ही भविष्यवक्ताओं के आगे-पीछे चक्कर लगाते हैं। वे उनसे पूछते हैं, कि "बताइए हमारा भविष्य कैसा होगा?" "वे भविष्यवक्ता लोग अपना भविष्य ही ठीक प्रकार से नहीं जानते, तो दूसरों को उनका भविष्य क्या बताएंगे!" "उनमें से अधिकांश लोग तो ईश्वर को भी ठीक प्रकार से नहीं जानते। ईश्वर की कर्म फल व्यवस्था को नहीं जानते। तो वे किसी का भविष्य क्या बता पाएंगे? इसलिए उनके आगे पीछे न घूमें।"

"क्योंकि आपका भविष्य तो आप स्वयं ही जानते हैं। आप जैसा कर्म करते हैं, बस वैसा ही आपका भविष्य होगा। आप अच्छा या बुरा कैसा कर्म करते हैं, इस बात को ठीक ठीक या तो ईश्वर जानता है, या आप। इसलिए अपना भविष्य जानने के लिए किसी अन्य मनुष्य के आगे पीछे चक्कर न काटें।"

"हां, आप अपने कर्मों का सुधार अवश्य करें। यदि आप अपना भविष्य उत्तम बनाना चाहते हैं, तो सदा बुरे कर्म करने से बचें, और अच्छे कर्म ही करें। क्योंकि कर्मों को सुधारने से ही आपका भविष्य सुधरेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं है।"

"स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक,
निदेशक - दर्शन योग
महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात."

वेद वाणी

मैं शरीर में पावक वर्ण (शरीर स्वस्थ रहे)अग्नि के समान शक्तिशाली हो, मन शुचिता से पूर्ण हो, मस्तिष्क चिंतनशील हो!

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम! पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभिस्तोमैरनूषत्

व्याख्या मस्तिष्क, मन, शरीर व संसार (धन) के चारों क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने वाला व्यक्ति प्रभु से प्रार्थना करता है कि हे पुरूवसो इमा याः मम् गिरः उत्वा वर्धन्तु पालक प्रभु! ये जो मेरी वाणियां है वे निश्चय से आपका वर्धन करें! मै आपके स्तुति वचनों का, प्रत्येक श्वासोच्छ्वास के साथ आपका स्मरण और जप करूँ! मेरा जीवन आपके भक्ति रूप रसायन का सेवन करने वाला हो जो व्यक्ति ऐसे करता है उसके जीवन में निम्न तीन परिवर्तन दीखते है!

१- पावकवर्णाः ये भक्त अग्नि के समान वर्ण वाले होते हैं! शरीर का स्वास्थ्य और मन की शान्ति इन्हें अग्नि के समान चमकाती है

२- शुचयः प्रभु के भक्त धन के प्रति कभी आसक्त नहीं होतें है! वे धन की दृष्टि में सदैव पवित्र होते हैं, रागद्वेष से उपर उठते हैं

३- विपश्चितः ये भक्त विशेष सूक्ष्मता से देखते हुए चिंतनशील होतें है!

जिन व्यक्तियों के जीवन में उल्लिखित परिणाम दीखते है! वे ही वस्तुतः स्तोमैः अभि अनूषत स्तुतियों से प्रभु का स्तवन करते हैं!

ऐसे भक्त का जीवन *पावकवर्णा, शुचि व विपश्चित का जीवन होगा ही

और यह मेध्यातिथि प्रभु के मार्ग पर चलनेवाला बनेगा

सुमन भल्ला
(वेद प्रचारिका महर्षि दयानंद समिति)

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

17 से 22 दिसंबर 2024

स्थान - वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, गुजरात

प्रशिक्षक - स्वामी विश्वङ् जी, मुनि सत्यजित् जी, मुनि ऋतमा जी, स्वामी सत्येंद्र जी, स्वामी श्रेयस्पति जी व आचार्य कर्मवीर जी

आवेदन लिंक -https://forms.gle/JWYH8VfZp6SEgeVZ7

आज जन-जन में ध्यान के प्रति रुचि बढ़ रही है । जीवन की समस्याओं का समाधान ध्यान के द्वारा हो सकने के प्रति जनता आशान्वित हुई है। जनता ध्यान की सही विधि सीखना-समझना चाहती है। ध्यान में आने वाली समस्याओं का समाधान व ध्यान के विषय में परामर्श चाहती है । ऐसे में ध्यान प्रशिक्षकों की आवश्यकता बढ़ गई है। इसे ध्यान में रखते हुए वानप्रस्थ साधक आश्रम, मुनि सत्यजित जी के निर्देशन व मुख्य प्रशिक्षण में ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करने जा रहा है। यदि आप ध्यान में रुचि रखते हो, साथ में ध्यान-साधना करते भी हो और अन्य को विधिवत सिखाने का पुण्य कार्य करना चाहते हो, तो यह शिविर आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। इस शिविर में वैदिक-आर्ष-पतञ्जल विधि से मूल-प्राचीन-शुद्ध ध्यान की विधि सिखाने का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। ध्यान प्रशिक्षण के बाद प्रायोगिक परीक्षा होगी । सफल व योग्य शिविरार्थियों को ध्यान प्रशिक्षक का प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

-: आयोजक :-

(वैदिक ज्ञान सिद्धान्त ध्यान साधना और अध्यात्म को समर्पित संस्थान)

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, त.-तलोद, साबरकांठा, गुजरात-383307

दूरभाष - 9427059550, 9116356961, 8290896378

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त

आर्यावर्त केसरी समाचार

१. ऋषि दयानन्द 'सत्य' को सर्वोपरि मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि - "जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना श्रेष्ठ है` सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं ।"

२. ऋषि संसार के सब मनुष्यों को एक ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई मानते थे। मनुष्य मात्र की एक जाति, एक धर्म, एक लक्ष्य की स्थापना उनका इष्ट था। जन्म से सब मनुष्य समान और कर्म से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र हैं । वर्ण गुण कर्म स्वभाव सूचक हैं, जाति सूचक नहीं ।

३. ऋषि का लक्ष्य मनुष्य मात्र को यह ज्ञान कराना था कि वह शरीर नहीं, शरीर का स्वामी 'आत्मा' है, आत्मतत्त्व को जान, ईश्वर का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त कर मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। भोगवाद और अध्यात्म का समन्वय ऋषि का विशेष संदेश था।

४. ऋषि का यह अटूट विश्वास था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना वे परम धर्म मानते थे । उनका विचार था जब से भारत वासियों ने वेद का स्वाध्याय छोड़ा है तभी से भारत का पतन प्रारम्भ हुआ है।

५. नारी जाति को ऋषि पूजनीय मानते थे। उन्होंने ५००० वर्षों के बाद सबल स्वरों में यह घोषित किया -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

६. ऋषि की दृष्टि में 'धर्म' वह है "जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।" उनका कथन था कि - ह्मैं अपना मंतव्य उसी को मानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। जो सत्य है उस का मानना-मनवाना और जो असत्य है उसका छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

७. ऋषि का आदेश था कि - "अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरें`

८. ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि मानते हुए, जीव को भोक्ता, प्रकृति को साधन, और ईश्वर से नित्य आनन्द प्राप्त करना जीव का लक्ष्य है। निरन्तर कर्म करते हुए, प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहना ही ज्ञानमार्ग उन्होंने बताया।

९. गंगा स्नान, व्रत, पूजा से पाप क्षमा नहीं होते। कर्मों का फल सभी को भोगना ही होगा। ऋषि का यह विश्वास पुण्य और धर्म भाव की आधार शिला था।

१०. मूर्ति पूजा, अवतारवाद, छूआछूत, गुरुडम और अन्धविश्वास, भूत प्रेतादि और मत-मतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे और वे इन्हें मनुष्यजाति के पतन का कारण मानते थे ।

११. ऋषि दयानन्द एक ईश्वर को उपास्य देव मानते थे। नाना देवी देवताओं और अवतारवाद को वे पतन का हेतु समझते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य मात्र अपने शुभ कर्मों से ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है इसके लिए किसी पैगम्बर या गुरु की आवश्यक नहीं।

१२. महर्षि दयानन्द ऐसी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व्यवस्था चाहते थे, जिसके द्वारा संसार स्वर्ग बन जाए और जन्म से मृत्यु तक कोई भी मनुष्य दुःख, कष्ट क्लेश अनुभव न करे।

१३. "सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके, सब से सब को सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।" - ऋषि का यह चरम लक्ष्य उनके ही शब्दों में कितना स्पष्ट है।

१४. अपने चरम लक्ष्य को पूरा करने की ऋषि की अत्यन्त उत्कंठा थी। वे लिखते हैं - "सर्वशक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाए।

क्यों प्रवृत्त हो जाए - इसका उत्तर ऋषि के शब्दों में इस प्रकार है - "जिस से सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहें। यही मेरा मुख्य प्रयोजन है।"

- भावेश मेरजा

ब्रह्मचर्य ईश्वर में विचरण, संयम और कर्तव्यों का पालन करना है

आर्यावर्त केसरी ब्यूरो

वेद एवं वैदिक साहित्य में ब्रह्मचर्य की चर्चा मिलती है। प्राचीन काल में मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया था। प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम कहलाता था। इसके बाद गृहस्थ आश्रम का स्थान था। ब्रह्मचर्य आश्रम जन्म से 25 वर्ष की आयु तक मुख्य रूप से माना जाता है परन्तु ब्रह्मचर्य का पालन मनुष्य को मृत्युपर्यन्त करने का विधान है। शास्त्रों में ब्रह्मचर्य की बड़ी महिमा गाई गई है। यहां तक कहा गया है ब्रह्मचर्य रुपी तप के पालन से राजा राष्ट्र की भली प्रकार से रक्षा कर सकता है। ब्रह्मचर्य के पालन से यवुती अपने सदृश युवा पति को प्राप्त करती है। ब्रह्मचर्य का पालन योगदर्शन में भी आवश्यक कहा गया है। ब्रह्मचर्य को पाचं यमों में सम्मिलित किया गया है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन नही करता उसका योग सफल नहीं होता। मनुष्य को स्वस्थ रहने, शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करने के लिये ब्रह्मचर्य पालन की महती आवश्यकता होती है। ब्रह्मचर्य के पालन से मनुष्य का शरीर स्वस्थ, निरोग, बलवान, विद्या ग्रहण करने की क्षमताओं से युक्त, दीर्घायु तथा यशस्वी बनता है। ब्रह्मचर्य के पालन से ही मनुष्य व देव मृत्यु रूपी दुःख को सहजता से पार होकर ब्रह्मलोक व मोक्ष को प्राप्त होकर जन्म व मरण के बन्धनों से छूट जाते हैं। ब्रह्मचर्य की महिमा अपरम्पार है। विदेशी विधर्मियों व पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव तथा वैदिक धर्म की विशेषताओं से दूर होने के कारण मनुष्य ब्रह्मचर्य जैसी अमृतमय महौषधि से दूर हो गया है जिसका परिणाम हम अल्पायु में नाना प्रकार के रोगों व अकाल मृत्यु के रूप में पाते हैं। शरीर को स्वस्थ रखने तथा विश्व में भारत को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए हमें ब्रह्मचर्य की उपेक्षा छोड़कर इसके यथार्थ महत्व को जानकर इसका सेवन करना होगा जिससे मनुष्य को वह सुख प्राप्त होगा जो साधरणतया आधुनिक व भौतिक जीवन जीने वाले मनुष्यों को प्राप्त नहीं होता।

ब्रह्मचर्य ब्रह्म अर्थात ईश्वर में अपनी आत्मा में लगाने व उसमें ही अवस्थित रहने को कहते हैं। ब्रह्म इस संसार को उत्पन्न करने तथा पालन करने वाली शक्ति है और इसी के द्वारा सृष्टि की अवधि पूरी होने पर प्रलय भी की जाती है। इस सृष्टि की आधेय शक्ति ब्रह्म सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तयार्मी, अनादि व नित्य है। उस ब्रह्म को उसके यथार्थस्वरूप में जानना सभी मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य है। ब्रह्म को धार्मिक व ज्ञानी माता-पिताओं सहित आचार्यों के उपदेशों से जाना जाता है। वेद एवं वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय से भी ब्रह्म अर्थात ईश्वर को जाना जाता है। आर्य विद्वानों ने ईश्वर विषय पर अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना की है। उन ग्रन्थों को पढ़कर ब्रह्म को जाना जा सकता है। ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश, इसका प्रथम व सप्तम् अध्याय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, ऋषि दयानन्द एवं आर्य विद्वानों के वेदभाष्य, आर्य विद्वानों के ग्रन्थ स्वाध्याय-सन्दोह, वेदमंजरी, श्रुति-सौरभ, वैदिक विनय आदि भी ईश्वर विषयक ज्ञान में सहायक हैं। ईश्वर को जानकर मनुष्य ईश्वर का उपासक बनता है। सद्ज्ञान व उपासना से ही मनुष्य अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर उन्हें सन्मार्ग पर चलाता है जिससे वह इन्द्रियों के अनेक दोषों व उनके हानिकारक प्रभावों से बच जाता है। ब्रह्मचर्य संयम को भी कहते हैं। सभी इन्द्रियों पर पूर्ण संयम रखना ब्रह्मचर्य होता है। अपनी सभी इन्द्रियों को संयम वा नियंत्रण में रखना और उन्हें मयार्दा के अनुसार चलाना व उनका उपयोग लेना ब्रह्मचर्य ही है। ब्रह्मचर्य में हम अपनी पांच ज्ञान व पांच कर्म इन्दियों का अपने शरीर व आत्मा की उन्नति के लिये उपयेाग करते हैं। उनका दुरुपयोग किंचित नहीं होने देते। यह भी ब्रह्मचर्य ही है। ब्रह्मचर्य पालन से शरीर में शक्ति का जो संचय होता है उसी से मनुष्य स्वाध्याय व साधना पर चल कर ईश्वर को जान पाता है और इसी से वह जीवन के लक्ष्य ईश्वर का साक्षात्कार करने में सफल होता है। यही जीवन मार्ग हमें वेदाध्ययन तथा ऋषियों के ग्रन्थों का अध्ययन करने पर विदित होता है। स्वाध्याय एवं उपासना करना ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन के आधार हैं। इससे मनुष्य के जीवन की रक्षा सहित ज्ञान व बल की उन्नति होती है। ब्रह्मचर्य की इन कुछ विशेषताओं के कारण ही रामायणकाल में हनुमान जी, महाभारत काल में भीष्म पितामह तथा आधुनिक काल में ऋषि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य का सेवन कर अनेक महत्वपूर्ण महान कार्यों को सम्पादित किया। यदि यह महान आत्मायें ब्रह्मचर्य का पालन करने वाली न होती तो इनके जीवन की जिन उपलब्धियों पर सभ्य संसार गौरव करता है, वह शायद इनके जीवन में न होती।

महर्षि दयानन्द के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो उनका जीवन अनेक महान कार्यों को सम्पादित करने वाला अपूर्व जीवन दृष्टिगोचर होता है। वह ऐसे महापुरुष थे जिनके समान विश्व में अब तक कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं हुआ। सभी महापुरुषों ने अपने समय में अनेक महान कार्यों को किया परन्तु जिन चुनौतियों का ऋषि दयानन्द को सामना करना पड़ा, वैसी चुनौतियां अन्य महापुरुषों के जीवन में देखने को नही मिलती। ऋषि दयानन्द के समय में वैदिक धर्म एवं संस्कृति अधोगति को प्राप्त थी। देश की स्वतन्त्रता विधर्मियों ने वैदिक धर्म में आयी विकृतियों के कारण छीन ली थी। हम पर शताब्दियों से नारकीय अत्याचार किये जा रहे थे। ऐसा कोई महापुरुष उत्पन्न नहीं हुआ जो हमें इन आघातों से बचाता। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द (1825-1883) का प्रादुर्भाव हुआ था। उन्होंने संसार में फैली हुई अविद्या का अध्ययन किया था। इसके कारण व समाधान ढूंढने में भी उन्हें सफलता मिली थी। उन्होंने पाया था कि वेदाध्ययन में जो बाधायें आयी हैं उन्हीं से देश व विश्व अविद्या फैली है और अन्याय, पक्षपात, शोषण, अत्याचार व अन्य अन्धविश्वास व कुरीतियां समाज में फैली हैं। यही मनुष्य जाति की अधोगति का कारण बनी हैं। इन्हें दूर करने के लिये ऋषि दयानन्द ने सृष्टि की आदि में ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान का देश देशान्तर में प्रचार किया। इससे अविद्या के बादल छंटे थे। हिन्दू जाति का विभिन्न अवैदिक मतों द्वारा किया जाने वाला धर्मान्तरण वा मतान्तरण रूका था अथवा कम हुआ था। उनके अभियान से देश व समाज उन्नति को प्राप्त हुआ। देश को स्वतन्त्रता प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर करने की प्रेरणा भी ऋषि दयानन्द की ही देन है। देश से अविद्या को दूर कर उसे विद्या व ज्ञान से युक्त करने का स्वप्न भी ऋषि ने देखा था तथा अविद्या व अज्ञान को दूर करने के लिये गुरुकुलीय शिक्षा का प्रचलन करने की प्रेरणा भी उन्होंने की थी जिसका उनके अनुयायियों ने पालन किया। इस कारण से आज हमारे पास वेद एवं वैदिक साहित्य के शताधिक व सहस्रों विद्वान हैं। आधुनिक शिक्षा के लिये भी आर्यसमाज ने डीएवी स्कूल व कालेज खोल कर देश को सुशिक्षित व उन्नत करने का महनीय कार्य किया है।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में समाज कल्याण तथा देशोन्नति सहित ईश्वर की उपासना के क्षेत्र में जिन अविद्यायुक्त कृत्यों का प्रकाश कर उपासना की सत्य विधि का प्रकाश किया उसके पीछे ऋषि दयानन्द का ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। यदि ऋषि दयानन्द आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन न करते तो जो उलब्धियां उन्हें अपने जीवन में प्राप्त हुई तथा जो उपलब्धियां देश को प्राप्त हुई हैं वह कदापि न होती। उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ज्ञान प्राप्ति, ईश्वर प्राप्ति तथा समाज सुधार के क्षेत्र में जो पुरुषार्थ किया, वह उनके ब्रह्मचर्य रूपी तप की ही देन थी। जीवन में सबसे बड़ा तप यदि कोई है तो वह ब्रह्मचर्य ही है। इस व्रत का जीवन भर पालन करना अत्यन्त कठिन एवं प्रायः असम्भव ही है। इसी तप व व्रत का ऋषि दयानन्द ने सफलतापूर्वक आजीवन पालन किया था। एक बार उनसे पूछा गया कि क्या आपके मन में काम विषयक विचार कभी नहीं आये? इस प्रश्न को सुनकर ऋषि दयानन्द मौन हो गये थे। कुछ देर बाद अपने पूरे जीवन पर दृष्टि डालकर उन्होंने कहा था कि वह जीवन भर ईश्वर के चिन्तन, विद्या के अर्जन व प्रचार के कामों में इतने व्यस्त रहे कि काम का विचार उनके मन में कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यदि काम ने कभी उनके निकट आने की चेष्टा की भी होगी तो वह द्वार पर खड़ा अवकाश मिलने की प्रतीक्षा करता रहा होगा। ऐसा अवसर न मिलने पर वह स्वयं लौट गया होगा। ब्रह्मचर्य के पालन की इच्छा करने वाले युवाओं व स्त्री-पुरुष सभी को पं. लेखराम, स्वामी सत्यानन्द, पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, मास्टर लक्ष्मण आर्य तथा डा. भवानीलाल भारतीय आदि आर्य विद्वानों द्वारा लिखित ऋषि दयानन्द के जीवन चरित अवश्य पढ़ने चाहियें। इससे उन्हें अनेक प्रेरणायें प्राप्त होगीं और उनका जीवन भी ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से उन्नत, सफल व महान बनेगा।

ब्रह्मचर्य विषय पर प्रवर वैदिक विद्वान स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार आदि ने इस विषय पर केन्द्रित उच्च कोटि के ग्रन्थों का प्रणयन किया है। सभी बन्धुओं को इन ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। इन ग्रन्थों को पढ़कर ब्रह्मचर्य का सत्यस्वरूप व इनसे जीवन में होने वाले लाभों का ज्ञान प्राप्त होता है। इससे मनुष्य अनेक बुराईयों व पापों से बच जाता है। इसके परिणामस्वरूप उसे सुख व यश की प्राप्ति होती है। ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही सभी दुःखों की निवृत्तिरूप मोक्ष की प्राप्ति भी सम्भव होती है। अतः शरीर व आत्मा की उन्नति तथा दुःखों की निवृत्ति के लिये वैदिक मान्यताओं के अनुरूप ह्यब्रह्मचर्यह्व का पालन सभी को करना चाहिये। यह आश्चर्य है कि हमारा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान स्वास्थ्य एवं जीवन उन्नति के इस महान साधन की उपेक्षा करता रहा है और अब भी कर रहा है। किशोर व युवा पीढ़ी को ब्रह्मचर्य का यथार्थ ज्ञान एवं महत्व विशेष रूप से विदित होना चाहिये। ब्रह्मचर्य के पालन से ही हमारे देश की युवापीढ़ी उन्नति को प्राप्त हागी जिससे देश, धर्म एवं मानवता की भी उन्नति होगी। ब्रह्मचर्य के पालन से जीवन अपने लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की ओर बढ़ सकता है। इससे मनुष्य का परजन्म सुधरेगा और मृत्यु के समय में उद्विग्नता व पश्चाताप न होकर शान्ति रहेगी।

॥ ओ३म् ॥
प्रो० सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134
प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काउंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार
सम्मान हेतु आवेदन-पत्र आमंत्रित हैं
न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस बार मार्च 2023 के अंतिम सप्ताह में कार्यक्रम का आयोजन होना है। इस अवसर पर सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों से जीवन परिचय (बायोडाटा) एवं आमंत्रित किये जाते हैं-
1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार
(वैदिक विद्वानों के लिए)
2. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार
(एकनिष्ठ ब्रह्मचारी के लिए)
3. ब्र.अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार
(वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान हेतु)
ये पुरस्कार उन लोगों के लिए हैं, जिन्होंने अपना जीवन सर्वतो भावेन आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित किया हुआ है।
उन आवेदन कर्ताओं को वरीयता प्रदान की जायेगी, जिनकी आय का कोई साधन नहीं होगा।
आवेदन पत्र 31 दिसम्बर 2024 तक भेजा जा सकता है।
कार्यक्रम की तिथि की सूचना शीघ्र ही दी जाएगी
प्रोफेसर (डॉ०) महावीर अग्रवाल, मंत्री
मंत्री, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास,
22, नन्द विहार, पोस्ट- गुरुकुल कांगड़ी-249404 (हरिद्वार)
चलभाष : 97190 04452

वैदिक नित्य कर्म विधि (अंग्रेजी)
इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, सन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मन्त्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, भजन इत्यादि सम्मिलित है विशेष बात यह है कि सभी मंत्रों का उच्चारण अंग्रेजी में एवं उनके अर्थ भी अंग्रेजी में दिए गए है। सभी मन्त्र मोटे और लाल, तथा अंग्रेजी वाले सभी मन्त्र नीले रंग में अर्थ सहित मुद्रित है। 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 144 संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य एक प्रति 350/- रुपये डाक व्यय अलग होगा ।
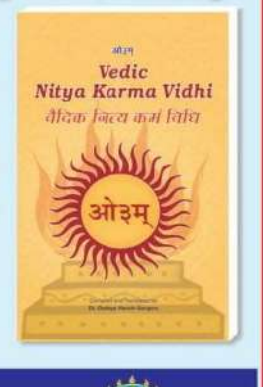

पुस्तक मंगाते हेतु हमारे निम्न खाते में राशि भेजकर फोन पर सूचित करें:
मधुर प्रकाशन
खाता संख्या : 0127002100058167
IFSC Code : PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
मधुर प्रकाशन दिल्ली-110006

ओ३म्
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
एवं
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
द्वारा आयोजित
योग्य, मेधावी छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु
आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण समारोह का
सीधा प्रसारण देखें
17 नवंबर 2024 प्रातः 9:30 बजे से
Scan to Watch Live TV
केवल आर्य संदेश टीवी पर
Arya Sandesh TV
aryasandeshtv.com
JioTV Jio tv+ dailyhunt Google Play YouTube
पर उपलब्ध

वार्षिक तथा आजीवन सम्मानित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आदरणीय महोदय/महोदया! सादर नमन, आशा है स्वस्थ एवं सानंद होंगे।

आपकी आर्यावर्त केसरी की वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि समाप्त हो चुकी है।

अतः अनुरोध है कि आगामी वर्ष (2023-24) के नवीनीकरण हेतु वार्षिक सदस्यता सहयोग राशि रू0 100/- अथवा आजीवन सदस्यता सहयोग राशि (10 वर्षीय) रु. 1100/- निम्न बचत खाते (S.B. A/C) में जमा करने का कष्ट करें :

खाते का नाम : आर्यावर्त केसरी खाता संख्या : 30404724002 IFSC कोड : SBIN0000610

शाखा : भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा

कृपया उक्त खाते में अपनी सहयोग राशि जमा करने के उपरांत मो. नं. 9412139333 अथवा 7017448224 पर अवगत कराने का कष्ट करें। उल्लेखनीय है कि समस्त आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र उनके जन्म - दिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित आर्यावर्त केसरी में प्रतिवर्ष प्रकाशित किए जायेंगे।

सादर- सधन्यवाद शुभाकांक्षी-

कृते आर्यावर्त केसरी/ प्रभारी-प्रसार

आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा

द्वारा प्रकाशित

आर्य समाज बुला रहा है

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान
पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय (एम. ए.)

द्वारा आर्य समाज के मूलभूत सिद्धांतों व विविध आयामों पर लिखी गई एक अत्यंत प्रभावी लघु पुस्तिका
(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

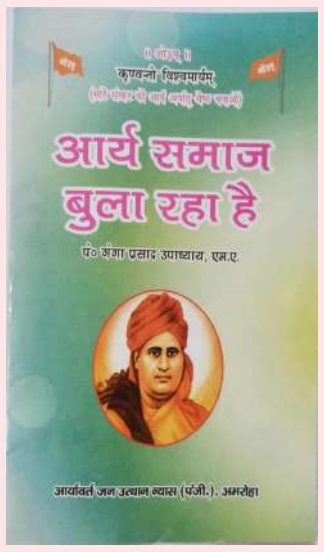

अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय व पठनीय पुस्तिका

आर्य समाज के उत्सवों, यज्ञ समारोहों तथा पारिवारिक या सामाजिक अनुष्ठानों के शुभ अवसर पर सैकड़ो की संख्या में इस लघु पुस्तिका का वितरण कर जन जन तक पहुंचाएं आर्य समाज की विचारधारा और उसके 10 सार्वभौमिक नियमों का मर्म।

पृष्ठ-12 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 12/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से दी जायेगी इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी है सुविधा।

अर्चना यज्ञ पद्धति

(महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ विधि सहित सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली द्वारा प्रमाणित यज्ञ की एक उत्कृष्ट पुस्तक)

(घर-घर पहुंचाएं यज्ञ की पुस्तक)

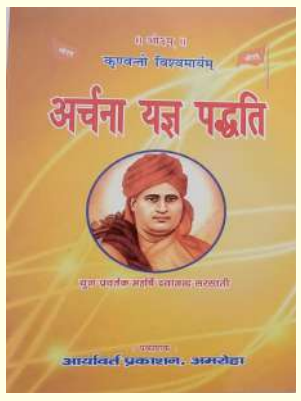

आर्य जनों की विशेष मांग पर साप्ताहिक सत्संगों, विशिष्ट बृहद यज्ञों एवं पारिवारिक तथा दैनिक यज्ञ की पुस्तक अर्चना यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) विगत 30 वर्षो से निरंतर प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में विशेष मंत्रों, प्रार्थनाओं तथा भजनों का भी समावेश किया गया है।

अत्यंत आकर्षक तथा सुंदर टाइटल के साथ उत्तम पेपर

पृष्ठ-40 (23X36 के 16वां साइज)

मूल्य : 20/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर 40% की विशेष छूट तथा वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

पुस्तक लेने हेतु आज ही अपना ऑर्डर बुक कराएं।

शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

दयानंद लघुग्रंथ संग्रह (महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा रचित पांच लघु पुस्तकों_पंच महायज्ञ विधि, अर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु तथा आर्याभिविनय का एक अनूठा संग्रह)

(घर-घर पंहुचाएं महर्षि कृत अमूल्य साहित्य)

आर्य जगत की विशिष्ट विभूति, वैदिक साहित्य के प्रकांड विद्वान, उच्चकोटि के लेखक, प्रभावशाली वक्ता तथा आर्ष साहित्य के मर्मज्ञ **पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी द्वारा संपादित** दयानंद लघुग्रंथ संग्रह का सर्वप्रथम प्रकाशन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, द्वारा दिल्ली में दिनांक 25 से 28 अक्टूबर 2012 को संपन्न अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर किया गया था। इसी का पुनर्प्रकाशन आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा महर्षि दयानंद के उत्कृष्ट साहित्य को जन-जन तक पहुंचने के उद्देश्य से फिर एक बार किया गया है। निश्चय ही, यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है। अतः आज ही मंगाएं अत्यंत आकर्षक कलेवर में सुंदर टाइटल के साथ प्रकाशित यह संग्रहणीय

पृष्ठ-212 (23X36 के 16वां साइज) मूल्य : 60/ प्रति पुस्तक।

अधिक संख्या में लेने पर आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.), अमरोहा के विशेष सौजन्य से इस पुस्तक पर 50% की भारी छूट दी जायेगी। साथ ही, वितरक में नाम, पता, चित्र व परिचय प्रकाशन की भी सुविधा है।

इस अनमोल ग्रन्थ को प्राप्त करने के लिए आज ही बुक कराएं अपना ऑर्डर।

शुभ अवसरों, विशेष अनुष्ठानों, उत्सवों तथा अपने प्रिय जनों की पुण्यस्मृति अथवा जन्म दिवस आदि के उपलक्ष्य में अधिक से अधिक संख्या में इस उपयोगी पुस्तक को वितरित कर आर्ष साहित्य के प्रचार_प्रसार में सहयोगी व सहभागी बनें।

।।ओ३म्।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 वीं जन्म जयंती

तथा

आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में घर-घर सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लें संकल्प

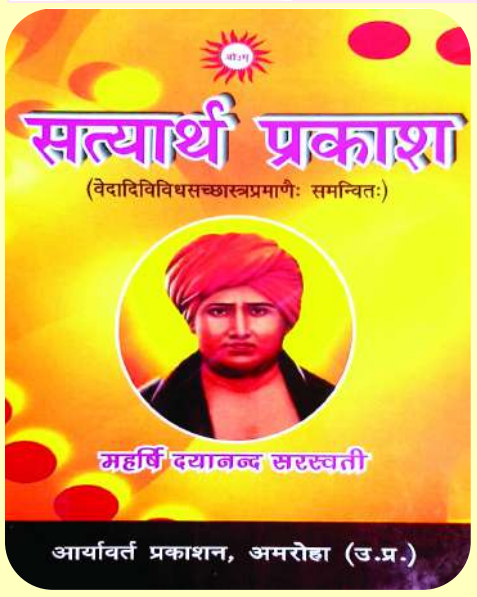

सत्यार्थ प्रकाश प्रेमोपहार के रूप में इसमें प्रकाशित होगा पूरा एक रंगीन पृष्ठ, जिस पर आप अपना, परिवार का अथवा किसी प्रिय जन का चित्र दे सकते हैं।

घर-घर पहुंचाएं ऋषि दयानंद का कालजयी
अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा की सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की पावन मुहिम से जुड़िए

व्यक्तिगत स्तर पर कम से कम 10 तथा
आर्य समाज व संस्थान के स्तर पर कम से कम 100
सत्यार्थ प्रकाश वितरण का उठाएं बीड़ा

अपने प्रिय आत्मीय जनों की पुण्य स्मृति में अथवा जन्म दिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, आदि जैसे शुभ अवसरों, उत्सवों और अनुष्ठानों के पावन उपलक्ष्य में आज ही

सत्यार्थ प्रकाश पर पाइए भारी छूट

साइज 20X30 / 8 मोटा टाइप, पक्की जिल्द एवं उत्तम कागज

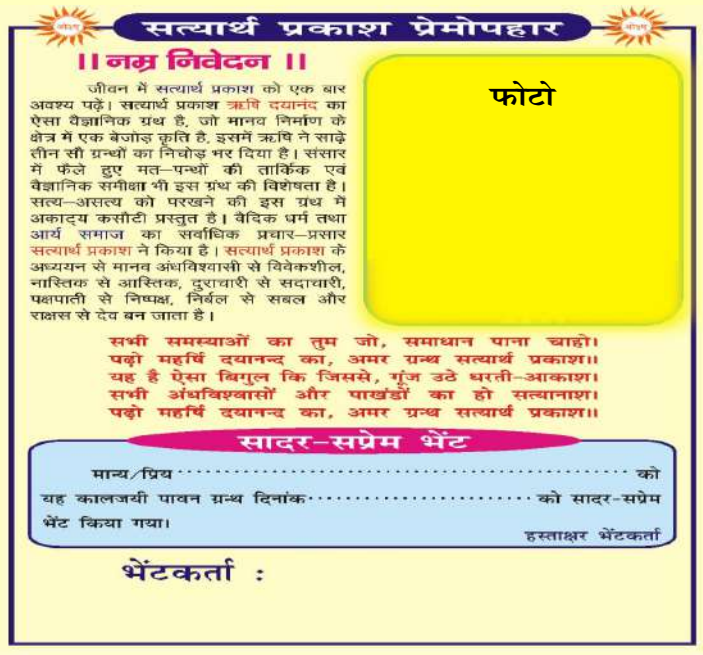

आज ही करें संपर्क : **डॉ. अशोक कुमार आर्य**
मो.94121 39333, 86308 22099 कार्यालय 87552 68578

तो फिर देर किस बात की ?

अभी उठाइए अपना फोन और मो. नं. 8630822099 अथवा 7017448224 पर बुक कराइए अपना ऑर्डर।

– : प्राप्ति स्थल :–

डॉ. अशोक कुमार आर्य, द्वारा आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.)

गोकुल बिहार, निकट श्रीराम पब्लिक इंटर कॉलेज, अमरोहा (उ0प्र0)-244221 (मो. 9412139333, 8630822099)

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सुंदर, सुशील, गृह कार्य मे दक्ष संस्कारित कन्या, कद 5ft. रंग- Fair जन्म-19/02/1991, शिक्षा- M.Com, PG Diploma in Accountancy (with computerized accounts &taxation), लखनऊ मे कार्यरत के लिए समकक्ष, संस्कारित युवक चाहिए। लखनऊ वासी को प्राथमिकता।
सम्पर्क- 9975109603, 9984602766, 8318651664

लड़की जन्म 08-04-1988 ऊँचाई, 5'3'' रंग-गोरा श्याम वर्ण, शिक्षा एम.ए. (इंग्लिश) बी.एड. वर्तमान में चन्दा देवी इण्टर कालेज आगरा प्राइवेट स्कूल में पीजटी। मूल निवासी आगरा। गोत्र : कश्यप ब्राह्मण, सौम्य सुशील। सम्पर्क सूत्र : एस.पी. चटर्जी, प्लाट नं0 89, पुष्पांजलि, लक्ष्मी पैलेस, फेज-प्रथम, देवरी रोड बुंदू कत्र आगरा-282001
मो0 9149374841

वधू चाहिए

❐ लखनऊ निवासी प्रतिष्ठित संस्कारवान परिवार के तलाकशुदा 49 वर्षीय युवक, लंबाई 5 3, शैक्षिक योग्यता बी.ए., एम.ए., अच्छी आय, शुद्ध शाकाहारी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य, सुशिक्षित तथा गृह कार्य में दक्ष अविवाहित, विधवा अथवा तलाकशुदा वधु चाहिए।
संपर्क सूत्र : 8755701393

❐ बरोग व्यू हॉस्पिटल रोड, सोलन (हिमाचल प्रदेश) निवासी सम्मानित ऑटोमोबाइल्स, मेडिकल, व प्ले स्कूल आदि व्यवसायों से सुसम्पन्न गोयल (वैश्य) परिवार के सदस्य, (मामा जी गुरुग्राम हरियाणा से विधायक), निजी प्रतिष्ठित व्यवसायिक संस्थान के स्वामी, 31 वर्षीय युवक, लंबाई 5 8, शैक्षिक योग्यता बी.बी.ए., एम.बी.ए., शुद्ध शाकाहारी, संस्कारवान हेतु सुंदर, सुशील, सुयोग्य एवम् सुशिक्षित वधु चाहिए। दहेज व जाति बंधन नहीं।
-संपर्क सूत्र : 8360658863, 9816852002

❐ बजाज अलाइन्स, गुड़गांव (हरियाणा) में कार्यरत युवक, 160 से.मी, जन्मतिथि 10. दिसंबर 1994, योग्यता बी.टेक (मैकेनिकल) इंजीनियर हेतु सुयोग्य समकक्ष शैक्षिक योग्यताधारी वैदिक संस्कारी बधू चाहिए।
संपर्क सूत्र : 9936799709

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. बीना 'आर्या'
साहित्य सम्पादक
बृजेन्द्र सिंह 'वत्स'
सह सम्पादक :
पं. चन्द्रपाल 'यात्री' डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार, डॉ. ब्रजेश चौहान
टंकण - विकास अग्रवाल/इशरत अली
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य
मो0 9412139333

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) द्वारा आर्यावर्त प्रिन्टर्स, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0 प्र0) से मुद्रित व कार्यालय आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ0 प्र0) से प्रकाशित एवं प्रसारित।
सम्पादक
डॉ0 अशोक कुमार रुस्तगी,
मो0- 9412139333
E-mail :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त प्रकाशन द्वारा भव्य कैलेण्डर प्रकाशन

यह है कैलेण्डर का प्रारूप साइज 19 गुणा 25 ईंच उत्तम क्वालिटी का आर्ट शीट पेपर ऊपर तथा नीचे पत्ती युक्त लैमिनेटेड बहुरंगी छपाई का भव्य कैलेण्डर

वर्ष 2025 के अपने कैलेण्डरों का आदेश आज ही बुक करायें

प्रचारार्थ मूल्य

1350 रूपये सैंकड़ा

वितरक में नाम तथा पते के प्रकाशन की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है

कृपया अपना प्रकाशन आदेश निम्न चलित भाष पर अंकित कराने का कष्ट करें 9412139333, 8755268578

अपनी धनराशि 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC Code : SBIN0000610) में आदेश से पूर्व या आदेश की आपूर्ति होने के बाद भी भेज सकते हैं

धन्यवाद

- डॉ0 अशोक कुमार आर्य (सम्पादक)

कृपया अपना ऑर्डर आज ही बुक करायें तथा जन जन तक पहुँचाये 2025 का यह भव्य कैलेण्डर

डाक द्वारा भेजने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।